International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

प्रकृति पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की पर्यावरणीय संचेतना :

निशान्त उपाध्याय

शोध छात्र – भूगोल J.R.F.(U.G.C.)

Absatract:
मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभिक काल से आज तक जितने भी लोकनायक हुए हैं राम इन सभी में महानायक हैं। लोकदृष्टा तुलसीदास का मानना है कि सभी प्राणियों में साक्षात् राम आत्मवत् हैं वही जीवन के केन्द्र में है, सारा संसार उनकी रचनात्मक चेतना का प्रतिबिम्ब है। अयोध्या नगरी से प्रारंभ हुई युवराज राम की जनचेतना की सांस्कृतिक यात्रा में प्रकृति का भरपूर योगदान रहा है। यह लोक जागरण यात्रा कई नदियों के किनारे विभिन्न भाषा–भाषी अनेक जातियों को जोड़ती हुई, अनेक पर्वतमालाओं और गंगा–यमुना के मैदानों से गुजरती हुई दण्डकारण्य, पंचवटी, किष्किन्धा और रामेश्वरम् होती हुई श्रीलंका पहुँचती है इसमें लोक जीवन, लोक संस्कृति और प्रकृति के उपहारों का त्रिवेणी संगम प्रतीत होता है। इस संस्कृति यात्रा में राज सत्ता पर लोकजीवन का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

Keyword: मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभिक काल से आज तक जितने भी लोकनायक हुए है, राम इन सभी में महानायक है

पर्यावरण' दो शब्दों का संयोजन है – 'परि' तथा 'आवरण'। 'परि' का आशय चारों ओर तथा 'आवरण' का ढकना या आच्छादन करना है। आकाश, वायु, जल, अग्नि एवं पृथ्वी – इन पाँचों तत्वों की विशुद्धि और पवित्रता से संपूर्ण परिवेश परिशुद्ध हो जाता है और इनमें विकार आ जाने से वातावरण दूषित हो जाता है। हमारी प्राचीन संस्कृति 'अरण्य–संस्कृति' या 'तपोवन–संस्कृति' के नाम से जानी जाती रही है, पर आज के विकासवाद से उसका रूप प्रायः अस्तित्वविहीन–सा हो रहा है। जिस प्रकार शरीर में वात–पित्त कफ का असंतुलन हमें रुग्ण कर देता है, उसी प्रकार भूमि, जल, वायु आदि में असंतुलन होने पर प्रत्येक जीव–जंतु, पेड़–पौधे और मानव पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। प्रदूषित पर्यावरण अनेक रोगों को जन्म देता हे। इसे नियति न समझकर मानव द्वारा प्रसूत विकृति कहना अधिक ठीक होगा। इसके लिए सचेष्ट रहने की आवश्यकता है।

"अयोध्या नगरी से प्रारंभ हुई युवराज राम की जनचेतना की सांस्कृतिक यात्रा में प्रकृति का भरपूर योगदान रहा है। यह लोक जागरण यात्रा कई नदियों के किनारे विभिन्न भाषा–भाषी अनेक जातियों को जोड़ती हुई, अनेक पर्वतमालाओं और गंगा–यमुना के मैदानों से गुजरती हुई दण्डकारण्य, पंचवटी, किष्किन्धा और रामेश्वरम् होती हुई श्रीलंका पहुँचती है इसमें लोक जीवन, लोक संस्कृति और प्रकृति के उपहारों का त्रिवेणी संगम प्रतीत होता है। इस संस्कृति यात्रा में राज सत्ता पर लोकजीवन का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। यहाँ प्रकृति के साथ पारिवारिक रिश्तों का लंबा सिलसिला चलता है। वनवास काल में पेड़, पहाड़, नदियां और वन्य प्राणी सभी सीता एवं राम के सहयोगी बनते है। ये सभी उस विराट परिवार के सदस्य है, जिसके मुखिया स्वयं राम है। इसलिए यहाँ राम एवं सीता का सख्य भाव केवल शबरी, गिद्ध, जटायु या वानरों तक ही सिमित नहीं है वह तो सरयू, गंगा और गोदावरी जैसी नदियों, जलाशयों और वृक्षों से लेकर व्यापक वन–सौन्दर्य तक फैला हुआ है।"

मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभिक काल से आज तक जितने भी लोकनायक हुए हैं राम इन सभी में महानायक हैं। लोकदृष्टा तुलसीदास का मानना है कि सभी प्राणियों में साक्षात् राम आत्मवत् हैं वही जीवन के केन्द्र में है, सारा संसार उनकी रचनात्मक चेतना का प्रतिबिम्ब है।

सिया राम मय सब जानी। करौं प्रणाम जोरि जुग जानी॥

गोस्वामी तुलसीदास का समय भारतीय समाज व्यवस्था का ऐसा आदर्श काल था, जिससे समाज को सदैव नयी चेतना और नयी प्रेरणा मिलती है। इस काल की समृद्ध प्रकृति और सुखी समाज व्यवस्था हजारों वर्षों से जन सामान्य को प्रभावित और आकर्षित करती रही है। इसलिये रामराज्य हमारा सांस्कृतिक लक्ष्य रहा है। रामचरितमानस में भारतीय समाज के गौरवशाली अतीत की मधुर स्मृतियां संजोयी गयी हैं। देश की श्रेष्ठ पर्यावरणीय विरासत के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना भी मानसकार का लक्ष्य रहा होगा। मानसकार ने यह बताने का प्रयास किया है कि रामायण कालीन भारत में समाज में पेड़–पौधो, नदी नालों, व जलाशयों के प्रति लोगों में जैव सत्ता का भाव था। यही कारण है कि प्रकृति के अवयवों जैसे – नदी, पर्वत, पेड़–पौधें, जीव–जन्तुओं सभी का व्यापक वर्णन मानस में सर्वत्र मिलता

है। नदी पर्यावरण का प्रमुख घटक है। दुनिया की सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास प्रायः नदियों के तट पर हुआ था। हमारे देश में काशी, मथुरा, प्रयाग, उजैन और अयोध्या जैसे आध्यात्मिक नगर नदियों के तट पर स्थित है। पर्वत प्रकृति के महत्वपूर्ण अवयव हैं। पर्वतराज, हिमालय भारतमाता के मुकुट के रूप में प्राचीन काल से ही प्रतिष्ठित है। हिमालय के अतिरिक्त चित्रकूट पर्वत का चित्रण रामचरित मानस में विस्तृत रूप से आया है। पर्वत पर हरियाली थी एवं वन्य जीव ऋषि मुनियों के स्वाभाविक मित्र के रूप में आश्रमों में निवास करते थे।

बाल्मीकि रचित रामायण से लेकर तुलसीदास रचित रामचरित मानस में प्रकृति चित्रण पर्यावरण संचेतना , पर्यावरण संरक्षण का विस्तृत उल्लेख किया गया है। वास्तव में हिन्दू धर्म एक विशिष्ट पूजा पद्धति , आस्था तक ही सीमित नहीं है वरन जैसा कि भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी हिन्दू धर्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि हिन्दूधर्म एक जीवन शैली है। हिन्दू धर्म की इस जीवन शैली में धर्म तथा पर्यावरण में सह–सम्बन्ध माना गया है। जिसके अन्तर्गत पर्यावरण प्रकृति के साथ मानव द्वारा उचित, संवेगात्मक एवं सामन्जस्यपूर्ण सम्बन्ध निभाना ही उसका धर्म है। पृथ्वी को धरती माता के रूप में पूजित माना गया तथा सूर्य,जल,वायु,वृक्ष, अग्नि सभी को देवता मानकर पूजनीय माना गया केवल यही नहीं विभिन्न देवी–देवताओं के वाहक के रूप में विभिन्न पशु–पक्षियों की भी आराधना की पद्धति विकसित की गयी।

प्रकृति का सीमित विदोहन ही मानव–जीवन के सुखमय भविष्य का आधार है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त वस्तु का उपयोग हमें प्रकृति से अनावश्यक छेड़छाड़ किये बिना करना चाहिए। ऐसी सामाजिक संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है जिसका वर्णन तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में किया है।

पर्यावरण संरक्षण से प्रकृति संरक्षण ही नहीं होता है वरन इसके साथ– साथ मानव जाति के स्वास्थय सम्बन्धी समस्याओं का निदान भी होता है। रामायण तथा रामचरितमानस में ' संजीवनी बूटी ' का प्रसंग द्योतक है कि प्रकृति में उपलब्ध दुर्लभ बूटी–संजीवनी से मृत प्राय शरीर भी जीवित हो सकता है आवश्यकता केवल उन औषधीय जड़ी–बूटियों के विषय में ज्ञान की है। भारत में आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली प्राकृतिक जड़ी–बूटियों के औषधीय गुणों पर ही आधारित है परन्तु पाश्चात्य ऐलोपेथी चिकित्सा प्रणाली के प्रचार प्रसार ने इस आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली को न केवल अत्यधिक हानि पहुँचाई वरन् इसको अनुपयोगी सिद्ध करने में भी कोई कोर कसर नहीं रखी है।

प्रतीकात्मक रूप में श्रीरामचन्द्र जी की उपस्थिति प्रकृति को सम्पन्न बनाती है। इस तथ्य को सांकेतिक रूप से तुलसीदास जी अरण्यकांड में कहते है।

' जब ते राम कीन्ह तहँ बासा। सुखी भए मुनि बीती त्रासा।
संत विटप सरिता गिरि धरनी। पर हित हेतु सबन्ह के करनी।।
गिरि वन नदी ताल छबि छाए। दिन दिन प्रीति अति होहि सुहाय।।

बाल्मीकि रचित रामायण से लेकर तुलसीदास रचित रामचरित मानस में प्रकृति चित्रण पर्यावरण संचेतना, पर्यावरण संरक्षण का विस्तृत उल्लेख किया गया है। वास्तव में हिन्दू धर्म एक विशिष्ट पूजा पद्धति , आस्था तक ही सीमित नहीं है वरन जैसा कि भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी हिन्दू धर्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि हिन्दूधर्म एक जीवन शैली है। हिन्दू धर्म की इस जीवन शैली में धर्म तथा पर्यावरण में सह–सम्बन्ध माना गया है। जिसके अन्तर्गत पर्यावरण प्रकृति के साथ मानव द्वारा उचित, संवेगात्मक एवं सामन्जस्यपूर्ण सम्बन्ध निभाना ही उसका धर्म है। पृथ्वी को धरती माता के रूप में पूजित माना गया तथा सूर्य,जल,वायु,वृक्ष, अग्नि सभी को देवता मानकर पूजनीय माना गया केवल यही नहीं विभिन्न देवी–देवताओं के वाहक के रूप में विभिन्न पशु–पक्षियों की भी आराधना की पद्धति विकसित की गयी। मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभिक काल से आज तक जितने भी लोकनायक हुए है, राम इन सभी में महानायक है लोकदृष्टा तुलसीदास का मानना है कि सभी प्राणियों में साक्षात् राम आत्मवत् है वही जीवन के केन्द्र में है इसलिए सारा संसार उनकी रचनात्मक चेतना का प्रतिबिम्ब है।

सिया राम मय सब जानी। करौ प्रणाम जोरि जुग जानी।।

गोस्वामी तुलसीदास का रचनाकाल भारतीय समाज व्यवस्था का ऐसा आदर्श काल था, जिससे समाज को सदैव नई चेतना और नई प्रेरणा मिलती है। इस काल की समृद्ध प्रकृति और सुखी समाज व्यवस्था हजारों वर्षो से जन सामान्य को प्रभावित और आकर्षित करती रहती है इसलिए रामराज्य हमारा सांस्कृतिक लक्ष्य रहा है। रामचरितमानस में भारतीय समाज के गौरवशाली अतीत की मधुर स्मृतियाँ संयोजी गयी है। देश की श्रेष्ठ पर्यावरणीय विरासत के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना भी मानसकार का लक्ष्य रहा है मानसकार ने यह बताने का प्रयास किया है कि रामायणकालीन भारत में समाज में पेड़–पौधों, नदी–नालों व जलाशयों के प्रति लोगो में जैव सत्ता का भाव था। यही कारण है कि प्रकृति के अवयवों जैसे नदी, पर्वतों, पेड़–पौधे, जीव–जंतुओं सभी का व्यापक वर्णन मानस में सर्वत्र मिलता है।

नदी पर्यावरण का प्रमुख घटक है । दुनिया की सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास प्रायः नदियों के तट पर हुआ था हमारे देश में कशी, मथुरा, प्रयाग, उज्जैन और अयोध्या जैसे आध्यात्मिक नगर नदियों के तटों पर स्थित हैं । गंगा हमारे देश में प्राचीनकाल से पूज्य रही है, गोस्वामीजी लिखते है गंगा का पवित्र जल पथ की थकान को दूर कर पथिक को सुख प्रदान करने वाला हैं।

गंगा सकल मुद मूला। सब सुख करिनहरनि सब सूला।।

इसीलिए ईश्वर के स्वरूप श्री रामचन्द्र जी स्वयं गंगा को प्रणाम करते हैं तथा अन्य से भी वैसा ही कराते हैं।

उतरे राम देवसरि देखी। कीन्ह दंडवत हरषु विसैषी।।
लखन सचिव सिय किए प्रनामा। सबहि सहित सुखु पायउ रामा।।

मानस में गंगा यमुना तथा संगम के चित्रण के अतिरिक्त सरयू नदी का विवरण भी है। सरयू का निर्मल जल आसपास के वायु मण्डल को भी शुद्ध करता है ।

बहइ सुहावन त्रिविध समीरा। भइ सरजू अति निर्मल नीरा।।

इसके अतिरिक्त स्थान स्थान पर सई, गोदावरी, मंदाकिनी आदि नदियों का वर्णन रामचरितमानस में आया है। उस समय की सभी नदियां स्वच्छ एवं पवित्र जल से परिपूर्ण थी । यह सदानीरा नदिया बारह मास कल कल बहती थीं, जिसके किनारे रहने वाले मनुष्य, पशु–पक्षी सभी आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करते थें।

सरिता सब पुनीत जलु बहहिं। खग मृग मधुप सुखी सब रहहिं।।

पर्वत प्रकृति के महत्वपूर्ण अवयव है। पर्वतराज, हिमालय भारतमाता के मुकुट के रूप में प्राचीन काल से ही प्रतिष्ठित है। हिमालय के अतिरिक्त चित्रकूट पर्वत का चित्रण रामचरितमानस में विस्तृत रूप से आया है। पर्वत पर हरियाली थी एवं वन्य जीव ऋषि मुनियों के स्वाभाविक मित्र के रूप में आश्रमों में निवास करते थें।

जहँ जहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे। उचित बास हि मधुर दीन्हें।।
चित्रकुट गिरि करहु निवासु। तहँ तुम्हार सब भांति सुपासू।।
सैलु सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग विहग बिहारू।।
मानस के अरण्य कांड में पम्पा सरोवर का वर्णन अत्यंत मनोहारी है।

प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने से अनेक विकृतियां उत्पन्न होती हैं। प्रकृति के सानिध्य में न रहने वाले जीव जंतुओं का अस्तित्व संकटग्रस्त हो जाता है। जब श्रीरामचन्द्र जी की प्रार्थना पर समुद्र ध्यान नहीं देता है, तो वे क्रोधित होकर धनुष बाण उठाते है जिससे समस्त जलचर व्यथित हो उठाते है दृ

संधोनेउ प्रभु बिसीव कराला। उठी उदधि उर अंतर जवाला।।
मकर उरग झष गन अकुलाने। जरत जंतु जलनिधि जब जाने।।

वास्तव में प्रकृति हमें स्वाभाविक रूप से अपने उपहार देती है। कृतज्ञ भाव से बिना छेड़छाड़ किये उन्हें ग्रहण करना चाहिए असीमित स्वार्थ से किया गया शोषण विकृति उत्पन्न करता है, जो अतंतः प्रलयकारी है। प्रकृति की इस प्रवृति को समुद्र के माध्यम से मानस में अभिव्यक्ति मिली है।

सागर निज मरजादा रहही। डारहि रत्नहिं नर लहहीं।।

मानसकार ने दोहे व चौपाइयों के माध्यम से हमें पर्यावरण एवं प्रकृति के विविध आयामों से परिचित कराया है। मानस में इस काल के स्वाभाविक प्रकृति चित्रण ने मनोहारी हरी–भरी धरती और वन्य–जीवन के प्रति प्रेममूलक संबंधों एवं पर्यावरण के संरक्षण में समाज के अंतिम व्यक्ति तक को भागीदार बनाये जाने का आदर्श समाज के सामने उपस्थित किया है। इस प्रकार प्रकृति के संतुलन में संस्कृति की शाश्वतता का युग संदेश हमारे लिए इस काल की महत्वपूर्ण विरासत है। मानसकार तुलसी ने मानस में पृथ्वी से लेकर आकाश तक सृष्टि के पांचो तत्वों की विस्तृत चर्चा की है। भारतीय मनीषा की यह मान्यता रही है कि मनुष्य शरीर मिट्टी, अग्नि, जल, वायु, और आकाश इन्हीं पांच तत्वों से मिलकर बना है। इसका दूसरा आशय यह भी है कि प्रकृति निर्मल और पवित्र रहने पर प्राणीमात्र के लिए फलदायी और सुखदायी होती है।

क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।।

इस काल में पर्यावरण इतना संतुलित था कि कृषि, पशुपालन और अन्य कार्यो में कभी कोई बाधा नहीं आती थी। इस समय समाज में

धन–धान्य की किसी भी प्रकार की कमी नही थी। एक स्थान पर वर्णन आता है दृ

विधुं मय पुरखनहि रवि तप जेतनेहि काज। मांगत वारिद जल देत श्रीरामचन्द्र के राज।।

इस प्रकार सर्दी–गर्मी और बरसात का मौसम चक्र अपनी संतुलित गति से चलता था। उस समय ना बाढ का संकट था, न ही सूखे का संकट होता था इस प्रकार प्रकृति के समन्वयकारी सहयोग में समाज की स्थिति कैसी थी इस पर तुलसी लिखते है दृ

दैहिक दैहिक भौतिक तापा। राम राज नहीं काहुहि व्यापा।।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक को सुख, संतोष और आनंद उपलब्ध था अर्थात् सर्वत्र शांतिपूर्ण मंगलमय वातावरण था। इसके साथ ही राम, लक्ष्मण और सीता जी वन में भी आनदित और प्रशंसित थे। मानस में एक प्रसंग में कहा गया है कि दृ वन में खाने के लिए फल है, सोने के लिए धरती माँ का आँचल है और धूप से बचने के लिए छाया देने वाले वृक्ष है, ऐसे में खड़ाऊ पहनकर चलने की क्या जरुरत है? वहां धरती की हरी–हरी दूबे नंगे पावों को स्वतः ही सुखद लगती थी।

चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई। कंद मूल फल आनहू जाई।।

वन्य जीवन से जुड़े अनेक प्रसंगों का मानस में सुंदर वर्णन है । राम जब वनवास में जा रहे थे उस समय का विवरण है कि राम के वनगमन मार्ग में अनेक पर्वत प्रदेश, घने जंगल, रम्य नदियाँ और उनके किनारों पर रमण करते हुए सारस और अन्य पक्षीगण, खिलेदृ खिले कमल दल वाले जलाशय और उनके अपने जलचर है, इतना ही नहीं उनके पास ही झुंड के झुंड हिरण, मदमस्त गेंडे, भैंसे और हाथी सभी मौज में घूम रहे है, इन्हें ना तो सुरक्षा की चिंता है और ना ही कोई किसी से भयभीत है। इस प्रकार के नैसर्गिक परिदृश्य राम को जगह–जगह दिखाई देते है। वृक्षों एवं वन्य जीवों के प्रति राम एवं सीता का लगाव भी कम नहीं है। पशुओं से वो इस प्रकार का व्यवहार करते है मानो वे उनके परिवार के सदस्य हो। मानस में कहा गया है कि वनवास में सीताजी जंगल में हिरणों को नित्यप्रति हरी घास खिलाती थी।

इस प्रकार अनेक प्रसंग हैं, उनमे से कुछ का प्रतीकात्मक उल्लेख किया गया जो वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं, देखा जाए तो इन प्रसंग और संदर्भो की चर्चा आज ज्यादा जरुरी हो गई है। प्रकृति प्रेमी राज को आपना आदर्श मानने वाले समाज की आज की स्थिति क्या है? वन, उपवन और उद्यानों को छोड़ दे तो आजकल तुलसी का पौधा भी घरों से गायब होता जा रहा है। प्रायः बड़े घरों के लान एवं गमलो में केक्टस ज्यादा दिखाई देते हैं। घर में भीतरी सजावट में भी ज्यादातर लोगों का प्रकृति प्रेम प्लास्टिक के फूल पत्तों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। आधिकतर घरों में कांच के गमलो में प्लास्टिक के फूल पौधे बैठक कक्ष की अलमारी या टी.वी. टेबल की शोभावृद्धि करते हैं। आज हम जितने सभ्य और सुसंस्कृत समाज में जी रहे है, उतने ही प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं।

यहां यह स्मरण करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि हम प्रकृति से जुड़कर ही प्रकृति पुरुष राम से जुड़ पाएंगे। क्या हमारे प्रकृतिउन्मुख क्रियाकलापों की स्थिति और उसका स्तर हमारे लोकजीवन के आदर्श श्रीराम के रिश्ते को परिभाषित करने की कोई कसोटी हो सकती है?

सन्दर्भ :

1ण रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा
2ण रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा
3ण रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा
4ण रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, दोहा
5ण रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, दोहा
6ण रामचरितमानस, लंकाकाण्ड, दोहा
7ण रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, दोहा
8ण रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, दोहा
9ण रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड